परिपत्र - चतुर्थ

शाम्भवे गुरवे नमः

शिव शिष्य परिवार
हमारे गुरू शिव

मिती :- 30.10.2016
दीपावली, 2016

पत्रांक - शि.शि.प.(मु.) - 39/16 स्थान :- राँची, झारखंड।

प्रेषक : अभिनव आनन्द
सचिव,
शिव शिष्य परिवार
राँची, झारखंड।

सेवा में,

भारत देश के सभी सजग शिव शिष्य/शिष्यायें।

विषय :- शिव शिष्य परिवार द्वारा निर्गत परिपत्र-प्रथम, दिनांक 15.06.2008, परिपत्र-द्वितीय, दिनांक 25.04.2010 एवं परिपत्र तृतीय, दिनांक 12.03.2012 के उपरान्त समय के अंतराल में शिव चर्चा एवं शिव कार्य की समुचित व्यवस्था एवं सामाजिक-सह-आध्यात्मिक उन्नयन के निमित्त कतिपय मार्गदर्शन से क्षेत्रों के शिव शिष्य/शिष्याओं एवं स्वमेव को अवगत कराने के संबंध में।

प्रिय आत्मन्,

आप अवगत हैं कि शिव के गुरू स्वरूप की चर्चा वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा वर्ष 1982 के सितम्बर माह से बिहार के मधेपुरा जिले से प्रारंभ हुई। उत्तरोत्तर शिव को गुरू मानने वाले शिष्य/शिष्याओं की संख्या में वृद्धि होती गयी। विदित है कि वर्ष 1990 से अब तक शिव शिष्यता की व्याप्ति के क्रम में आयोजित संगोष्ठियों में लिए गये आवश्यक निर्णयों व उक्त संगोष्ठियों में वरेण्य गुरूभ्राता एवं दीदी नीलम आनन्द द्वारा दिये गये आध्यात्मिक उन्नयन के निमित्त मार्गदर्शनों को शिव शिष्य परिवार द्वारा निबंधनोपरान्त अंगीकार किया गया है।

उपर्युक्त विषय के संबंध में सादर निवेदन है कि लगभग नौ वर्षों से शिव शिष्य परिवार द्वारा शिव चर्चा एवं शिव कार्य हेतु कतिपय मार्गदर्शक सिद्धांत समस्त शिव शिष्य/शिष्याओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय परिपत्र के माध्यम से संसूचित

शिव शिष्य परिवार

किये गए थे। विदित है कि परिपत्र प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय में उल्लिखित बातों से आप सभी को अनवरत अवगत कराया जाता रहा है तथापि पूर्व निर्गत परिपत्रों के मुख्य बिन्दु प्रस्तुत परिपत्र में सम्मिलित किये गये हैं।

तृतीय परिपत्र दिनांक **12.03.2012** के निर्गत होने के उपरांत लगभग चार वर्ष से अधिक के अंतराल में शिव गुरू चर्चा से शिव शिष्यता में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। जनसमूह भी हमसबों के कार्यक्रमों में भारी संख्या में एकत्रित होने लगा है। शिव शिष्य परिवार अपने आध्यात्मिक कार्यक्रमों के इहलौकिक एवं पारलौकिक परिप्रेक्ष्य में यथासंभव सतर्क एवं सजग रहता है। आप भी सहमत होंगे कि सुव्यवस्था और कार्यक्रमों की सफलता मूलतः प्रत्येक व्यक्ति की आध्यात्मिक मानसिकता पर निर्भर करती है। शिव शिष्य परिवार एक-एक व्यक्ति की चेतना के परिमार्जन के निमित्त महेश्वर शिव से शिष्य के रूप में जुड़ाव की बात करता है और प्रयत्नशील भी है तथापि स्वार्थजनित कारणों से अवरोध भी पैदा होते हैं। शिव शिष्य परिवार का एकमात्र मूल लक्ष्य है कि संपूर्ण जगत में अध्यात्म प्रवाहित हो और जन-जन सुवासित हो सके। इसी कार्य को अबाध एवं अनवरत गति प्रदान करने हेतु प्रस्तुत चतुर्थ परिपत्र निर्गत किया जा रहा है। इस परिपत्र की बातों से भारत एवं भारत के बाहर शिव शिष्य एवं शिष्याओं को अवगत कराने के पुनीत कर्त्तव्य का कृपया निर्वहन करें। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय परिपत्र को भी दृष्टिगत रखना आवश्यक है।

संबंधित मार्गदर्शक कंडिकाएँ निम्नरूपेण हैं :–

कंडिका :

1. वरेण्य गुरूभ्राता द्वारा शिव के गुरू स्वरूप से जन मानस को जोड़ने पर बल दिया गया है ताकि एक-एक व्यक्ति का शिव के गुरू स्वरूप से जुड़ाव हो सके। उन्होंने लौकिक कार्यों के प्रति सचेत रहते हुए शिव कार्य के प्रति सजग, सचेष्ट एवं संवेदनशील होने को कहा है। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझाने की आवश्यकता है कि शिव केवल नाम के ही नहीं अपितु काम के गुरू हैं। यह सूचना राजा से रसोईया तक को पूर्व से है कि शिव गुरू, जगतगुरू, आदिगुरू, गुरूओं के गुरू, महागुरू हैं। अतएव हमें जनमानस को मात्र सूचना नहीं देनी है, उन्हें शिव के गुरू स्वरूप से अवगत कराना है, समझाना है कि शिव का शिष्य आसानी से हुआ जा सकता है ताकि उनका मन शिव को अपना गुरू बनाये।

   जनमानस को यह समझाना होगा कि महेश्वर शिव (महादेव) से सुख, संतान, समृद्धि, सम्मान प्राप्त करने का सदियों पुराना सिलसिला रहा है और जनमानस में यह परंपरा बड़ी पुरानी है। जब महादेव (अवढ़रदानी) से दान लिया जा सकता है तो उनसे (वे ही जगतगुरू हैं) ज्ञान क्यों नहीं प्राप्त किया जा सकता। बिना ज्ञान अथवा समझ के दान की कोई सार्थकता नहीं है। आशंका रहेगी कि ज्ञान रहित दान आत्मघाती हो सकता है। जन-जन को यह समझाना है कि महादेव अवढ़रदानी हैं तो ज्ञान के दाता भी हैं। आप जानते हैं कि भारतीय आध्यात्मिक

धारा में शिव को ईश्वर, परमेश्वर, महादेव तथा परमात्मा कहा गया है और समझा गया है यानि वे ही समस्त शक्तियों के जनक हैं। वरेण्य गुरूभ्राता ने कहा कि गीत के बोल भले समाप्त हो जाँय किन्तु श्रोताओं के मन में शिव शिष्यता की गूंज सदैव बनी रहे। ऐसी ही गुरू चर्चा शिव शिष्यों को गुरू दया से करनी है।

आप जानते हैं कि व्यक्ति का किसी सत्ता से जुड़ाव भावात्मक होता है। भाव की परिधि में प्रवेश के उपरांत ही शिव की शिष्यता परिलक्षित हो सकेगी और व्यक्ति का भाव उसके आचरण एवं व्यवहार से प्रकट होता है। हमारी चेष्टा होनी चाहिये कि शिव की शिष्यता जो प्रथमतः एक विचार है, भाव में रूपांतरित होकर व्यक्ति का स्वभाव बन जाय। शिष्यता का भाव अन्ततः प्रेम में रूपायित होता है।

2. **महोत्सवों/परिचर्चाओं एवं कार्यक्रमों की व्यवस्था हेतु कतिपय निर्देश :-**

(1) परिपत्र-प्रथम की कंडिका-12, परिपत्र-द्वितीय एवं तृतीय की कंडिका-03 में उल्लेख किया गया है कि भजनों का समावेश शिव गुरू चर्चा के समय को कम कर देता है अतएव इसे न्यून किया जाय। आप जानते हैं कि भजन, कीर्तन, प्रवचन, हवन, आरती एवं शिव जागरण आदि का आज के मानव मन पर स्थायी प्रभाव नहीं हो पाता है। क्षेत्रों में शिव शिष्य एवं शिष्याएँ, जिन्हें शिव शिष्यता की अवधारणा की समझ नहीं हो पायी है, शिव गुरू चर्चा के बदले में भजन, हवन, अष्टयाम, आरती आदि का कार्यक्रम चलाते हैं। शिवचर्चाओं में इन भजन, कीर्तन आदि के कार्यकलापों को कुछ तथाकथित शिव शिष्य/शिष्याएँ व्यक्तिगत भौतिक लाभ के लिए भी बढ़ावा देते हैं। इन क्षेत्रों के सजग शिव शिष्यों/ शिष्याओं को चाहिए कि शिव शिष्यता की अवधारणा से क्षेत्र के सभी गुरू भाई/बहनों को अवगत करायें। याद रखना होगा कि कीर्तन, भजन, हवन, आरती आदि शिव शिष्यता का अंग नहीं है एवं शिव शिष्य परिवार इसकी अनुमति नहीं देता है।

(2) परिपत्र-प्रथम की कंडिका-21 एवं परिपत्र-द्वितीय की कंडिका-04 में भी यह उल्लेख किया गया है कि क्षेत्रों में आयोजित शिव गुरू परिचर्चा/महोत्सवों में विशेष कर भजन/कीर्तन के समय कुछ आगन्तुक लोग, संभव है उन लोगों ने शिव शिष्यता की घोषणा करायी हो, कभी-कभी झूमने लगते हैं। लोक भाषा में इसे प्रेत बाधा कहा जाता है। यह कमजोर मन का परिचायक है। यह व्यक्ति का उसके मन पर नियंत्रण खोना है। सामान्यतः यह देखा जाता है कि किसी दुर्घटना को देखकर कमजोर मन वाले लोग या तो बेहोश हो जाते हैं या अजीबोगरीब हरकत करने लगते हैं। आप जानते है कि किसी व्यक्ति का मन जब साहसी मन के साथ होता है तो संगति उसे बलशाली बनाती है। शिव को महेश्वर कहा गया है और वे समस्त शक्तियों के जनक हैं। "या शक्ति शिवस्य शक्ति"। शिव सर्वोच्च गुरू हैं, अतएव शिव के गुरू स्वरूप से शिष्य के रूप में जुड़ाव के उद्देश्य से चर्चा-परिचर्चा में तल्लीन व्यक्ति का मन शनैः - शनैः बलशाली होने लगता है। ऐसे कमजोर मन वाले को शिव शिष्य बनने के

लिए प्रेरित करना होगा। आपने देखा है कि जैसे-जैसे शिव शिष्यता प्रगाढ़ होती है तथाकथित भूतखेली या प्रेतबाधा कम होने लगती है। उक्त क्षेत्रों में आयोजित शिव गुरू चर्चा/महोत्सवों में भजन, कीर्तन, हवन, आरती के कार्यक्रमों को बंद किया जाना चाहिए और शिव गुरू की चर्चा करने हेतु एकत्रित जनसमूह को शिव शिष्य बनने के लिए प्रेरित करना ही प्रत्येक शिव शिष्य/शिष्या का एकमात्र कर्त्तव्य है।

(3) यदा-कदा ऐसा पाया जाता है कि छद्मवेशी शिव शिष्य/शिष्या अर्थोपार्जन अथवा अन्य निजी लौकिक चाहत से शिव शिष्यता के तीन सूत्रों से अलग मांत्रिक, ओझा, तांत्रिक आदि के रूप में क्षेत्रों में काम करने लगते हैं एवं झाड़-फूँक, हवन, आरती आदि की क्रियाएँ शिव शिष्यता की आड़ में करते हैं और अपने को शिव शिष्य कहकर भीड़ एकत्रित करते हैं। क्षेत्रों के लोग विशेष कर महिलाएँ आस्था के अधीन ठगी जाती हैं। उन क्षेत्रों के सजग शिव शिष्य/शिष्याओं को चाहिए कि गुरू भाई/बहनों को समझायें ताकि वे छद्मवेशी शिव शिष्य/शिष्याओं (तथाकथित) के चंगुल से मुक्त हो सकें। ऐसे कूकृत्यों से शिव शिष्यता की छवि धूमिल होती है। परिपत्र-प्रथम की कंडिका-14, कंडिका-15 एवं 24, परिपत्र द्वितीय की कंडिका-05 तथा परिपत्र तृतीय की कंडिका 3 के (3) के द्वारा पूर्व से ही प्रचालित किया जाता रहा है कि शिव शिष्य परिवार शिव गुरू की अवधारणा की परिधि से बाहर दिये गए कोई विचार, वक्तव्य अथवा कोई कृत्य का सहभागी नहीं होगा और न ही उसका उत्तरदायित्व वहन करेगा।

(4) वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी अथवा मुख्यालय से प्रतिनियुक्त किसी शिव शिष्य/शिष्या के क्षेत्रों में भ्रमण के दौरान अधिकतम पाँच चार-पहिये वाहन ही मुख्य अतिथि के वाहन के साथ कारकेड में चल सकेंगे। मोटर साईकल की अनुमति प्राप्त होने पर चालक के लिए हेलमेट एवं जूता अनिवार्य होगा। कारकेड के चार पहिये वाले वाहन/मोटर बाईक के वैध कागजात एवं अनुज्ञप्ति की जिम्मेवारी उक्त वाहन के चालक एवं वाहन मालिक की होगी। मुख्य अतिथि अथवा शिव शिष्य परिवार का कारकेड की गाड़ियों/मोटर बाईक की वैधता से कुछ भी लेना-देना नहीं होगा।

(5) महोत्सवों/परिचर्चाओं/संगोष्ठियों में वरेण्य गुरूभ्राता, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं गणमान्य अतिथियों के मंच तक आने एवं मंच से जाने का मार्ग सामान्य रास्तों से अलग रखा जाय।

(6) मंच को नीचे भी बंद किया जाय ताकि कोई मंच के नीचे प्रवेश नहीं कर सके।

(7) मुख्य अतिथि के मंच पर जाने पर स्थानीय छः गुरूभाई मंच के नीचे चारों ओर रहेंगे एवं मुख्यालय द्वारा निर्धारित पाँच व्यक्ति ही मंच पर जा सकेंगे। मंच की संपूर्ण व्यवस्था का प्रभार स्थानीय वरीय शिव शिष्य/शिष्या का होगा।

(8) डी0 एरिया में प्रवेश पाने के लिए स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष अधिकतम पच्चीस पास निर्गत कर सकेंगे अन्यथा प्रशासन के अलावा कोई प्रवेश नहीं होगा।

(9) वरेण्य गुरूभ्राता/मुख्य अतिथि के महोत्सवों/परिचर्चाओं/संगोष्ठियों के आयोजन चहारदीवारी/घेरेवाले मैदान में नहीं होंगे। यदि ऐसा पाया जाता है तो शिव शिष्य परिवार स्थानीय आयोजन समिति के विरूद्ध कार्रवाई कर सकेगा। क्षेत्रों में ठहराव/रात्रि विश्राम के स्थल पर अधिकतम ग्यारह गुरूभाई ही व्यवस्था/सुरक्षा हेतु रहेंगे। आगमन एवं प्रस्थान में भी व्यवस्था/सुरक्षा हेतु अधिकतम ग्यारह व्यक्ति ही रह सकेंगे। रहने वाले व्यक्तियों का निर्धारण स्थानीय आयोजन समिति करेगी।

(10) किसी भी महोत्सव/परिचर्चा/संगोष्ठी में मात्र पेयजल की व्यवस्था होगी। किसी भी परिस्थिति में भोजन अथवा अल्पाहार नहीं दिया जायेगा। कोई भी उपहार सामग्री/पंफलेट/पर्चा/कपड़ा/कागजात आदि वितरित नहीं होंगे। स्थानीय आयोजन समिति इसके उल्लंघन पर उत्तरदायी होगी एवं उसके विरूद्ध वैधानिक कार्रवाई की जा सकेगी।

(11) किसी भी बड़े कार्यक्रम में पेयजल एवं महिलाओं, पुरूषों के लिए अस्थायी शौचालय की व्यवस्था अनिवार्य होगी।

(12) मुख्य अतिथि के क्षेत्र में ठहराव, आगमन, प्रस्थान एवं भ्रमण की सूचना सुरक्षा के दृष्टिकोण से गोपनीय रखी जानी चाहिए। स्थानीय आयोजन समिति का उत्तरदायित्व होगा कि मुख्य अतिथि के आने-जाने के मार्ग, ठहराव, भ्रमण की सूचना को गोपनीय रखेंगे।

(13) मुख्य अतिथि का वाहन जिस प्रशासनिक जिले से गुजरेगा, जिले के वरीय सजग शिव शिष्य/शिष्या एक अलग वाहन से जिले की सीमा के आरम्भ से लेकर अंतिम सीमा तक साथ रहेंगे। उनके वाहन में पाँच व्यक्ति रहेंगे जिसका निर्धारण वे स्वंय करेंगे। इसकी व्यवस्था कार्यक्रम की आयोजन समिति सुनिश्चित करेगी एवं आवश्यक होने पर उसका व्यय भार भी वहन करेगी।

(14) "मुख्य अतिथि" शब्द का अभिप्राय होगा वरेण्य गुरूभ्राता/शिव शिष्य परिवार के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव अथवा अध्यक्ष/सचिव, शिव शिष्य परिवार द्वारा प्रतिनियुक्त कोई शिव शिष्य/शिष्या।

(15) मुख्य अतिथि के किसी भी आयोजन के एक माह पूर्व आयोजन समिति के गठन की हस्ताक्षरित मूलप्रति स्थानीय अध्यक्ष/सचिव, आयोजन समिति, मुख्यालय को हस्तगत करायेंगे। इसके पूर्व यथासंभव मुख्यालय की समिति पूरी व्यवस्था का निरीक्षण कर लिखित प्रतिवेदन मुख्यालय को उपलब्ध करायेगी जिसमें वैधानिक सभी बिन्दुओं का समावेश होगा।

(16) मुख्य अतिथि का ठहराव स्थल/रात्रि विश्राम आयोजन-स्थल से कम से कम तीन किलोमीटर दूर रखा जाय तथा मुख्य अतिथि के वाहन के अलावा एक अतिरिक्त वाहन चालक के साथ सुरक्षित रखा जाय। चालक की अनुज्ञप्ति एवं गाड़ी के कागजात की

वैधता स्थानीय अध्यक्ष, आयोजन समिति सुनिश्चित करेंगे। मुख्य अतिथि की सुरक्षा की जिम्मेवारी स्थानीय आयोजन समिति की होगी।

(17) सभी वृहत् महोत्सवों/परिचर्चाओं/संगोष्ठियों के आयोजन के एक माह पूर्व ही सभी प्रशासनिक स्वीकृतियाँ प्राप्त कर ली जाय एवं संभावित भीड़ की संख्या का उल्लेख किया जाय। ये प्रशासनिक स्वीकृतियाँ जिलाधिकारी/अनुमण्डल पदाधिकारी, अग्निशमन विभाग, विद्युत विभाग एवं अन्य अपेक्षित विभागों से प्राप्त की जाय। मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी से यथाआवश्यकता दो एम्बुलेंस एवं चिकित्सक की प्रतिनियुक्ति करा ली जाय। अग्निशमन उपकरण की अगर आवश्यकता हो तो व्यवस्था की जाय। पुलिस अधीक्षक से संभावित भीड़ की संख्या दर्शाते हुए पर्याप्त पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति का अनुरोध किया जाय। सभी अनुरोध पत्रों एवं प्रतिनियुक्ति आदेशों की छायाप्रति एक माह पूर्व मुख्यालय को उपलब्ध करा दी जाय। उक्त आयोजनों के एक सप्ताह पूर्व संबंधित जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक तथा जिला मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, अनुमण्डल पदाधिकारी एवं अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी तथा संबंधित थाना प्रभारी से स्वयं मिलकर आयोजन के बारे में स्मारित कराते हुए आयोजन में पधारने का अनुरोध किया जाय। किसी भी परिस्थिति में ध्यान रहे कि सभी उल्लिखित प्रशासनिक स्वीकृतियाँ आयोजन के एक माह पूर्व ही प्राप्त कर ली जाय।

(18) ध्यान रखा जाना चाहिए कि शिव गुरू महोत्सवों/परिचर्चाओं के आयोजन के पूर्व प्रचार-प्रसार के निमित्त किये जाने वाले कार्य यथा दीवार लेखन, बैनर, स्वागतद्वार इत्यादि विधिमान्य प्रशासनिक अनुमति के उपरांत ही किये जाँय। ध्यान रखना चाहिए कि सरकारी भवनों, सड़कों, दीवारों व अन्य सरकारी संपत्तियों पर दीवार लेखन नहीं किया जाय। निजी भवनों, स्थलों तथा दीवारों पर भू-स्वामी की अनुमति से ही दीवारों पर आध्यात्मिक वाक्य लिखे जा सकते हैं। शिव शिष्य परिवार विधि मान्य नियमों के उल्लंघन का उत्तरदायित्व वहन नहीं करता है।

(19) शिव शिष्य परिवार के द्वारा विगत कई वर्षों से मौखिक एवं लिखित रूप से लगातार अनुरोध किया जा रहा है कि शिव गुरू महोत्सव/परिचर्चाओं में न्यूनतम राशि व्यय की जाय। विचारणीय है कि आय-व्यय में पारदर्शिता नहीं रखने पर शिव शिष्यता की छवि धूमिल होती है। अनुरोध है कि सभी शिव शिष्य एवं शिष्याएँ आयोजनों के आय-व्यय के मामले में पारदर्शिता सुनिश्चित करें एवं कार्यक्रमों के आयोजकगण स्थापित नियमों के अनुरूप आय-व्यय का लेखा संधारित करें अन्यथा जनमानस में शिव के गुरू स्वरूप के प्रचार-प्रसार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा इस आलोक में गहरी चिन्ता व्यक्त की गयी है। कहा गया है कि हमारे किसी भी कार्य से शिव गुरू स्वरूप के प्रचार-प्रसार में यदि प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तो ऐसा माना जाना चाहिए कि हमसबों के गुरू शिव की अप्रसन्नता का यह कारण हो सकता है। किसी भी परिस्थिति में इसका अनुपालन नहीं करने पर यदि मुख्यालय को प्रतिकूल प्रतिवेदन प्राप्त होता है तो संबंधित व्यक्ति अथवा आयोजन समिति के विरूद्ध शिव शिष्य परिवार नियमानुकूल कार्रवाई करने को स्वतंत्र होगा।

साप्ताहिक/दैनिक/लघु परिचर्चाओं में राशि व्यय करने की परंपरा उचित नहीं है। यह परंपरा जनसामान्य को दैनिक/लघु/साप्ताहिक परिचर्चाओं को आयोजित करने में बाधक हो जायेगी। शिव शिष्य परिवार मुख्यालय साधनरहित एवं सीमित साधनों के कारण अपने स्तर से महोत्सव/परिचर्चा/संगोष्ठी आदि कार्यक्रमों को आयोजित नहीं कर पाता है। कोई भी कार्यक्रम स्थानीय गुरूभाई/बहनों के द्वारा आयोजित होते हैं और मुख्यालय से जुड़े गुरूभाई-बहन भी उसमें यथासंभव आर्थिक सहयोग देते हैं, ऐसी परिस्थिति में उल्लिखित किसी कार्यक्रम के आय-व्यय के लेखा-संधारण में पारदर्शिता अपेक्षित है।

(20) शिव शिष्य परिवार की स्थापना के पूर्व से वरेण्य गुरूभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा "खर्चा कम चर्चा ज्यादा" की बात सभी शिव शिष्य/शिष्याओं को लगातार कही जा रही है। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर भगवान शिव की चर्चा को कुछ लोगों ने अर्थोपार्जन और स्वार्थसिद्धि का साधन बना लिया है। भगवान शिव की चर्चा के मूल में भगवान शिव के गुरू स्वरूप से शिष्य के रूप में जनमानस का जुड़ाव करना है। अब इसकी आड़ में आयोजनों की बाढ़ आ गई है। कुकुरमुत्ते की तरह भजन, कीर्तन, गायन, वाद्य-यंत्रों का प्रयोग, वाद्य-यंत्रों की पूजा एवं शिव-चर्चा में चढ़ावा, तंत्र-मंत्र से रोगों का उपचार तथा इनके माध्यम से भोले-भाले व्यक्तियों का आर्थिक एवं मानसिक दोहन आदि की प्रक्रिया चल पड़ी है। शिव शिष्य परिवार इसका समग्रता से विरोध करता है। समझाने की प्रक्रिया भी चल रही है किन्तु कार्य-क्षेत्र की विशालता के कारण शिव शिष्य परिवार एवं सजग शिव शिष्य/शिष्यायें पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहे हैं। इन बातों को दृष्टिगत रखते हुए वरेण्य गुरूभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी के अनुरोध पर साहब श्री से मिलने हेतु मुख्य सलाहकार, श्री अर्चित आनन्द के द्वारा एक व्यक्तिगत अनुरोध पत्र सभी सजग शिव शिष्य/शिष्याओं के बीच वितरित किया गया है, जो निम्नरूपेण है :-

1. प्रथमतः यह स्मरण रखना है कि भगवान शिव के गुरू-स्वरूप से शिष्य के रूप में सानिध्य हेतु कोई वर्जना/बाध्यता नहीं है और न ही हो सकती है।

2. कम से कम एक माह में पुराने (तीन वर्ष के) गुरू भाई-बहन दस व्यक्तियों को शिव गुरू से शिष्य के रूप में जोड़ कर तीन माह में मिल सकते हैं।

3. तीन वर्ष से कम अवधि के शिव-शिष्य एवं शिष्याएँ कृपया तीन महीने में दस व्यक्तियों को शिव गुरू से जोड़ने के बाद ही आध्यात्मिक कार्य से मिल सकते हैं।

4. आयोजनों में कितनी भी घोषणा हो जाय केवल शिव चर्चा करने वाले वक्ता को ही एक व्यक्ति को जोड़ने के बराबर माना जायेगा किन्तु एक व्यक्ति को समझाने के प्रयास में यदि टोली में दस व्यक्ति भी हों तो सभी के लिए माना जायेगा कि प्रति व्यक्ति ने एक शिव-शिष्य बनाया है।

5. यह माना जायेगा कि कार्यक्रम में भजन-कर्त्ता, वाद्य यंत्र बजाने वाले, मंच संचालक, श्रोता गण एवं आयोजक ने कोई शिव-शिष्य नहीं बनाया है, किन्तु शिव कार्य में उनकी सहभागिता मानी जायेगी।

6. प्रत्येक शिव शिष्य से अनुरोध किया गया है कि तीन वर्ष में एक हजार शिव शिष्य/शिष्या उन्हें बनाना चाहिए।

7. विशेष परिस्थिति में यदि कोई एक माह में एक सौ शिव शिष्य/शिष्या बनाता है तो वह एक महीने बाद आध्यात्मिक कार्य हेतु शिव-शिष्य साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी से मिल सकता है।

8. विद्यार्थी, नवागन्तुक और एक वर्ष तक के शिव शिष्यों/शिष्याओं के लिए कोई बाध्यता नहीं रहेगी।

द्रष्टव्य : - यह बाध्यता मात्र शिव-शिष्य साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी से आध्यात्मिक कार्य हेतु मिलने के लिए दिनांक 31.12.2019 तक लागू है। स्थानाभाव और अप्रत्याशित भीड़ के कारण ऐसा निर्णय लिया गया है।

- शिव-शिष्य साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी के अनुरोध पर आधारित।

(21) यह ध्यान में सदैव रखें कि शिव गुरू चर्चा के निमित्त किसी भी व्यक्ति को कोई राशि किसी भी परिस्थिति में भुगतेय नहीं होगी। दूरदराज से आमंत्रित शिव शिष्य/शिष्या को विशेष परिस्थिति में आयोजकगण केवल मार्ग व्यय देंगे। भजन आदि के निमित्त आमंत्रित व्यक्तियों को कोई मार्ग व्यय नहीं दिया जायेगा।

(22) ऐसा पाया गया है कि शिव गुरू परिचर्चाओं/महोत्सवों में गुरूचर्चा करने वाले गुरूभाई/बहन अपनी चर्चा के समय का उपयोग वरेण्य गुरुभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी की चर्चा में ही कर लेते हैं। वक्ताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि महोत्सव/परिचर्चा का मंच शिव गुरू से जनमानस को जोड़ने के निमित्त होता है। स्पष्टतः शिव गुरू परिचर्चा के मंच का प्रयोग शिव के गुरु स्वरूप से जनमानस के जुड़ाव के प्रयोजनार्थ ही होना चाहिए।

महोत्सवों/परिचर्चाओं में वक्ता को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि शिव गुरू के मंच से की जानेवाली चर्चा/परिचर्चा शिव गुरू की ही परिधि में चले एवं गुरूचर्चा के क्रम में किसी अन्य गुरू या देवता या ग्रंथ की चर्चा करने की बाध्यता हो जाय तो उसकी सादर स्वच्छ समीक्षा ही की जाय क्योंकि शिव-शिष्यों की मान्यता है कि अन्य रेखाओं के अस्तित्व के उपरांत भी उनसे बड़ी रेखा खींची जा सकती है। ऐसा करने के क्रम में वक्ताओं द्वारा व्यक्त ऐसे विचार जो शिव गुरू की अवधारणा की परिधि से बाहर हो, पूर्णतः निजी होंगे और शिव शिष्य परिवार तथा अन्य गुरूभाई बहन ऐसे विचारों से सहमत होने को कतई बाध्य नहीं हो सकेंगे। ध्यान रखा जाय कि निर्दिष्ट शिव कार्य के अलावा किसी गुरूभाई/बहन के द्वारा व्यक्त किये गये कोई विचार अथवा किये गये किसी भी कृत्य का उत्तरदायी एवं सहभागी शिव शिष्य परिवार एवं अन्य गुरूभाई/बहन नहीं होंगे।

(23) शिव शिष्य परिवार की साप्ताहिक/दैनिक परिचर्चा केन्द्रों पर अधिकतम पचास व्यक्ति ही सम्मिलित हों ताकि ध्वनि विस्तारक यंत्र (लाउडस्पीकर) का प्रयोग आवश्यक न हो। साप्ताहिक/दैनिक परिचर्चाओं में ध्वनि विस्तारक यंत्र लगाने की आवश्यकता हो तो नियमानुसार प्रशासन से अनुमति प्राप्त कर ली जाय। कृपया इसे अत्यावश्यक समझा जाय। शिव शिष्य परिवार विधिमान्य नियमों के उल्लंघन का उत्तरदायित्व वहन नहीं करेगा।

(24) परिचर्चा/महोत्सव वास्तव में आध्यात्मिक आयोजन है। पंथ, धर्म (संप्रदाय), स्थान, जाति, वर्ग आदि से परे है। परिचर्चा स्थल पर आध्यात्मिक परिवेश बनाया जाय। सादगी और शांति रखी जाय। ''चर्चा अधिक और खर्चा कम'' की नीति अपनायी जाय।

3. ऐसा पाया जा रहा है कि शिव की शिष्यता में शिव शिष्यता के तीन सूत्रों, विशेष कर शिव गुरू चर्चा को ही सबकुछ समझ लिया जाता है। हमसबों को यह स्मरण रखना होगा कि शिष्यभाव जागरण के ये साधन हैं, साध्य नहीं। हमसबों के गुरू शिव हैं। वे ही हमसबों के साकार एवं निराकार आदर्श हैं। तीन सूत्र शिव गुरू से जुड़ाव के साधन मात्र हैं। ये मार्ग हैं, गन्तव्य नहीं। सीढ़ियाँ हैं, मंजिल नहीं। कतिपय शिव शिष्य/शिष्याएँ वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी को शिव शिष्यता का साकार आदर्श मानते हैं। उन्हें समझाना होगा कि शिव शिष्यता के साकार अथवा निराकार आदर्श शिव हैं, दूसरा कोई नहीं।

4. विदित है कि शिष्य/शिष्याओं की करोड़ से अधिक संख्या होने के कारण यह भी संभव है कि शिव शिष्यता का रंगा सियार बनकर कोई व्यक्ति गुरूभाई/बहनों को शिव गुरू के या वरेण्य गुरूभ्राता के नाम पर बेवकूफ बनाकर धन एकत्रित करने की कुचेष्टा करे। इस दिशा में सावधान रहने की जरूरत है। हमारे गुरू शिव शरीर में उपलब्ध नहीं हैं इसलिए उन्हें किसी धन या भौतिक दक्षिणा की जरूरत नहीं है। वास्तव में गुरू दक्षिणा शिष्य की अपने गुरू के प्रति कृतज्ञता है। गुरू शिष्य का संबंध प्रेम का होता है। इसमें पैसे का कोई उपयोग नहीं है। यह याद रखना चाहिए कि शिव का शिष्य होने के लिए एक अधेला भी खर्च नहीं होता है। संसार के किसी व्यक्ति को शिव का शिष्य होने की घोषणा करने अथवा शिव चर्चा कर दूसरों को शिव की शिष्यता की ओर अग्रसर कराने हेतु भौतिक सामग्रियों/पैसे (धन) प्राप्त करने का कतई अधिकार नहीं है।

5. शिव जगत के गुरू हैं अतः जगत का एक-एक व्यक्ति सहजता से शिव का शिष्य हो सकता है। शिव का शिष्य होने के निमित्त संसार के किसी व्यक्ति/सत्ता से पूर्वानुमति प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। शिव शिष्यता में धर्म (संप्रदाय), वर्ण, स्थान, वर्ग, जाति, भाषा, अमीर-गरीब इत्यादि का न तो कोई भेद है न ही कोई वर्जना है। जगतगुरू शिव के गुरू स्वरूप की चर्चा का उद्देश्य केवल चर्चा करना नहीं है अपितु यह दूसरों के मन में शिव के गुरू स्वरूप को प्रतिष्ठित करने की विधा है ताकि दूसरों का मन शिव को गुरू समझ कर शिष्य होने की ओर अग्रसर हो अतएव प्रत्येक व्यक्ति का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह

शिव को अपना गुरू बनाये और संसार के किसी स्थान में रहने वाले व्यक्ति/समूह को शिव की शिष्यता की ओर प्रेरित करे। हमसबों को चाहिए कि कोई भी व्यक्ति/समूह यदि शिव गुरू की चर्चा जन मानस का भगवान शिव के गुरू स्वरूप से शिष्य के रूप में जुड़ाव करने के उद्देश्य से किसी भी स्थान पर करता हो तो उसे यथासंभव सहयोग दें, ऐसा नहीं कि उसके इस कार्य में किसी प्रकार का अवरोध पैदा करें। यदि शिव गुरू चर्चा में किसी की बदनियती हो तो उसे समझाने का प्रयास करना चाहिए और गुरूभाई/बहनों से उसके कार्यक्रम में सम्मिलित न होने का अनुरोध करना चाहिए। क्षेत्रवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद आदि सीमारेखा का शिव शिष्यता में कोई स्थान नहीं है।

6. शिव शिष्य परिवार लाखों स्थान पर प्रतिदिन चल रही शिव चर्चा का सीमित साधनों के कारण अनुश्रवण नहीं कर पा रहा है। आप जानते हैं कि लाखों शिव शिष्य/शिष्याएँ प्रतिदिन शिव चर्चाओं में निकलते हैं। ऐसी स्थिति में एक-एक व्यक्ति के कथनी-करनी एवं कार्यकलापों पर किसी भी संस्था/संगठन/समूह का नियंत्रण संभव नहीं है तथापि शिव शिष्य परिवार शिव की शिष्यता को पूर्णतः आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने हेतु कृतसंकल्पित है।

7. वरेण्य गुरूभ्राता का यह कथन कि "कोई छूटे नहीं कोई टूटे नहीं" को वास्तव में चरितार्थ करने की चेष्टा अपेक्षित है। संसार के एक-एक व्यक्ति को शिव भाव की परिधि में समेटने का उद्देश्य रखने वाले को अपने दिल दिमाग का दरवाजा खोलना होगा। शिव तो साँपों को गले लगाते हैं, जो जन्मजात जहर रखते हैं और टेढ़ा चलते हैं। वे वक्री चन्द्रमा को शिरोधार्य करते हैं। इंसान तो जन्मजात न तो जहर रखता है और न ही टेढ़ा चलता है। शिव चिदानन्दमूर्ति हैं, विश्वमूर्ति हैं और अधिकांशतः इंसान अब इंसानियत की मूर्ति भी नहीं रह गया है। हमसबों के गुरू एवं आदर्श शिव हैं अतएव हमारा आपका आचरण भी शिव जैसा होना चाहिए। शिव के शिष्य शिव का संदेश सुनाते हैं और समझाते हैं। हमसबों को चाहिए कि शिव शिष्यता एवं शिवकार्य में शिव का प्रतिनिधित्व करें और शिव का ही आचरण प्रस्तुत करें। संप्रदाय, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि घटिया बातों से अपने को सचमुच में अलग रखें।

8. कुछ वर्षों से पाया जा रहा है कि शिव शिष्य/शिष्याएँ सभी प्रकार के कार्यक्रमों में अधिकांशतः वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी एवं दीदी नीलम आनन्द की तस्वीरें लगा देते हैं। यह उचित नहीं है। व्यक्ति का स्वभाव है कि वह मदद हेतु प्रथमतः प्रत्यक्ष को पकड़ता है। परोक्ष विस्मृत हो जाता है। हमारे गुरू शिव प्रत्यक्ष नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में श्री हरीन्द्रानन्द जी एवं दीदी नीलम आनन्द की तस्वीरें लोगों को अपने गुरू शिव से जुड़ाव में बाधक हो सकती हैं। हमें चाहिए की जगतगुरू शिव से लोगों का जुड़ाव सुनिश्चित करें। सच्चे अर्थों में यही शिव शिष्यता है। स्वयं से अथवा किसी व्यक्ति से जुड़ाव करना अथवा कराना हमारा ध्येय नहीं है।

9. पाया जा रहा है कि आयोजनों में अत्यंत छोटी-छोटी बातों को लेकर यदा-कदा कतिपय आपसी मतभेद हो जाया करते हैं। इसका निष्पादन एवं निपटारा स्थानीय आयोजन समिति ही कर लिया करे। यह स्पष्ट है कि इन विवादों एवं निपटारों से श्री हरीन्द्रानन्द जी तथा आमंत्रित गुरू भाई/ बहनों को कुछ भी लेना-देना नहीं है। यदि शिव शिष्य परिवार मुख्यालय को किसी विवाद की सूचना मिलती है तो शिव शिष्य परिवार विधिमान्य कार्रवाई कर सकेगा।

10. पहले पाँच या पाँच से अधिक लोग एकत्रित होकर शिव शिष्यता की घोषणा करते थे, अब एक व्यक्ति भी किसी की घोषणा उसकी इच्छा के उपरान्त कर सकता है। वरेण्य गुरू भ्राता ने कहा है कि जो लोग शिव को अपना गुरू बनाना चाहते हैं उन्हें भी स्वयं अपने नाम की घोषणा करने का अधिकार है। वरेण्य गुरूभ्राता द्वारा स्पष्ट किया गया है कि शिव शिष्यता ग्रहण करने अथवा शिव का शिष्य होने के लिए दूसरों के पास जाने की जरूरत नहीं है। संसार का कोई भी आदमी खुद ही शिव को गुरू बनाकर अपना आध्यात्मिक एवं लौकिक उन्नयन कर सकता है।

11. परिचर्चाओं/महोत्सवों मे, जिसमें अधिकाधिक भीड़ की संभावना हो, छोटे बच्चे-बच्चियों को साथ में नहीं लाया जाय। पाया गया है कि बच्चे रहते हैं और अभिभावक (माता-पिता) खो जाते हैं। ऐसी स्थिति में आगत परेशान होते ही हैं आयोजकों को भी परेशान कर बैठते हैं। इस संदर्भ में समय-समय पर बच्चों को न लाये जाने की एवं उनपर खास नजर रखने की उद्घोषणा की जाती है एवं अलग से एक सहायता केन्द्र भी महोत्सव स्थल पर काम करता है तथापि इस पर ध्यान देने की जरूरत है। शिव शिष्य परिवार बच्चों/सामग्रियों/आगन्तुकों के खोने का उत्तरदायित्व वहन नहीं करेगा।

12. महोत्सवों/परिचर्चाओं में यदा-कदा पाया गया है कि जब किसी गुरूभाई/बहन की चर्चा चल रही होती है तो उस दौरान कुछ शिव-शिष्य आपस में अनावश्यक बातें करते रहते हैं। इस संबंध में कोई निर्देश नहीं दिया जा रहा है किन्तु अनुरोध है कि हम सबों को यह समझना चाहिए कि शिव गुरू की चर्चा भले ही कोई करे, आपस में अनावश्यक बातें करना गुरू कार्य के प्रति संवेदनशील नहीं होना है। कार्यक्रम परिसर में आयोजनकर्त्ता गुरूभाई एवं बहनों के सहयोग से शांति-सुरक्षा की व्यवस्था कृपया रखें। इस कार्य के लिए पर्याप्त मात्रा में पुरूष एवं महिला स्वयंसेवक रखे जायें।

13. यह निर्णय पूर्व में भी परिचालित किया गया था कि शिव चर्चाओं से संबंधित सभी कार्यक्रम रात्रि 08 बजे तक समाप्त कर दिये जाएं किन्तु परिवेशजनित कारणों के परिप्रेक्ष्य में संसूचित किया जाता है कि शिव चर्चा से संबंधित सभी आयोजन दिवाकाल में किये जाँय और सूर्यास्त से पूर्व निश्चित ही समाप्त किये जाँय।

14. शिव गुरू अवधारणा हेतु वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी की हस्तपुस्तिका ''हमारे गुरू शिव'' जो लगभग सबके पास उपलब्ध है, उसे ध्यान से पढ़ा जाय अथवा दूसरों से पढ़वाकर ठीक से समझा जाय। शिव गुरू चर्चा में शिव शिष्य परिवार द्वारा सभी निर्गत परिपत्रों को पढ़कर अथवा पढ़वाकर समझ लेना आवश्यक है।

15. वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा कहा गया है कि जब व्यक्ति का मन गुरूभाव के अंतर्गत चलने लगता है तो यही शिष्य भाव की स्थिति होती है और किन्हीं नियमों व निदेशों की आवश्यकता नहीं रह जाती। गुरूदया से स्वतःस्फूर्त शिष्य-मन गुरू आदेश के अनुपालन की ओर सतत, सचेष्ट, और संवेदनशील बना रहता है। गुरू शिष्य संबंधों के पुष्प की सुरभि पूरे जगत को सुगंधित कर देती है।

16. शिव शिष्यों का इहलौकिक उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य को शिव गुरू की यथार्थ सत्ता से अवगत कराना है। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, लिंग, वर्ण एवं वर्ग के लोग महेश्वर शिव को अपना शिष्य भाव अर्पित करने की दिशा में अग्रसर हों, यही मनसा-वाचा-कर्मणा शिव शिष्यों का एकमात्र लोकाचरण है। शिव के गुरू स्वरूप की जन-जन में स्थिति से विश्व वाटिका में अध्यात्म अवतरित होकर सहृदयता, समानता और शांति के सुमन खिला देगा और प्रेम के पराग से मानवता सुगंधित हो जायेगी।

17. सादर अनुरोध है कि परिपत्र-प्रथम, परिपत्र-द्वितीय एवं परिपत्र तृतीय तथा प्रस्तुत परिपत्र को ध्यान से पढ़ा जाय एवं इसका अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। सभी क्षेत्रों के सभी सजग शिव शिष्य/शिष्याओं को परिपत्र-प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ के सभी बिन्दुओं से अवगत कराना हमसभी का दायित्व है। कृपया इसका अनुपालन सुनिश्चित करने की कृपा की जाय। शेष परिपत्र-प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय की सभी कंडिकाएँ प्रभावी मानी जायेंगी। चारों निर्गत परिपत्र शिव शिष्य परिवार के वेबसाईट **www.shivshishyapariwar.in** पर उपलब्ध है। वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी से आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास अपेक्षित है। हम सभी पंचानन, दक्षिणामूर्ति जगतगुरू शिव, जो परमसत्ता के वाच्य हैं, उनके शिष्य के रूप में ज्ञान दीप की अवली से इस वसुंधरा को आलोकित करने का संकल्प लेते हैं ताकि मानवीय सृष्टि करूणामय, सुखमय और शिवमय हो सके।

शुभेच्छु

(अभिनव आनन्द)
सचिव,
शिव शिष्य परिवार।

प्रतिलिपि : शिव शिष्य परिवार के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष/कार्यकारिणी समिति एवं आमसभा के सभी सदस्यों को सूचना एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित।

शुभेच्छु

(अभिनव आनन्द)
सचिव,
शिव शिष्य परिवार।

विज्ञापन :
वरेण्य गुरूभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी की निःशुल्क शिव गुरू चर्चा हमारे यूट्यूब (youtube) चैनल "शिव गुरू चर्चा" पर सुन सकते हैं।
www.youtube.com/shivgurucharcha पर सब्सक्राईब बटन दबायें और निःशुल्क सदस्यता प्राप्त करें।